

## RAJYA SABHA

Monday, the 11th August, 1980 | the 20th  
Sravana, 1902 (Sofcuj)

The House met at eleven of the clock, Mr.  
Chairman in the Chair.

### ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

MR. CHAIRMAN: Very thin House day.  
Question No. 261. Mr. Pradhan.

SHRI SADASHIV BAGAITKAR:  
Question No. 261. He has gone for *Mi Sir*.

MR. CHAIRMAN: Mr. Bagaitkar is here  
waiting for Deepavali, I think.

### circulation figures of 'dailies' published from Calcutta

♦261. SHRI PATITPABAN  
PRADHAN:

SHRI SADASHIV BAGAITKAR  
SHRI LADLI MOHAN  
NIGAM:

Will the Minister of INFORMATION AND BROADCASTING be pleased to state the circulation figures for 1979 of the dailies published from Calcutta namely, (i) Amrita Bazar Patrika, (ii) Calcutta Observer, (iii) Hindusthan Standard, (iv) Satyayug (Bengali), (v) Janani (Bengali), (vi) Ananda Bazar Patrika (Bengali), (vii) Jugantar (Bengali), and (viii) Basumati (Bengali) and the quantity of newsprint allotted to each of these dailies during the year 1979-80?

THE MINISTER OF INFORMATION AND BROADCASTING AND SUPPLY AND REHABILITATION (SHRI V. P. SATHE):  
The requisite information may kindly be seen in the enclosed statement.

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Sadashiv Bagaitkar.

844 RS—1.

### Statement

The claimed circulation figures and newsprint quota allotted in 1979-80 are given below:

Name of the Claimed daily Circulation	News print Quantity allotted (in mts)
1. Amrita Bazar Patrika	126032 3369.60
2. Calcutta Observer	9750 59.18
3. Hindusthan Standard	2649 12.80
4. Satyayug	16771 219.06
5. Janani	5200 34.55
6. Ananda Bazar Patrika	401485 7701.91
7. Jugantar	320711 5576.52
8. Basumati	17312 220.24

श्री सदाशिव बागाईतकर : श्रीमन्, मंत्री महोदय ने जो स्टेटमेंट दी है, जो आँकड़े दिये हैं वे तो मैंने पढ़ लिये हैं। असल में सवाल यह है कि अखबारों का सर्कुलेशन जो वह क्लेम करते हैं मैं बताना चाहता हूँ कि उनका अपना एक आडिट ब्यूरो सर्कुलेशन का होता है। आपकी सरकार ने एडवर्टाइजमेंट लेने के लिये, क्वालीफाई करने के लिये एक तो आँकड़े उनको देने पड़ते हैं और दूसरे कई ऐसे बड़े अखबार हैं जिनको डायरेक्ट इम्पोर्ट लाइसेंस प्राप्त है। मैंने यह सवाल इसलिए पूछा है जैसे बड़े अखबार हैं 'बैनेट कोलमैन एंड कंपनी' और 'एक्सप्रेस ग्रुप' इनके लिये काफी असें से शिकायत है। इन लोगों ने अपना एक स्थान कायम कर लिया है। इनको सरकार का आशीर्वाद प्राप्त है। वे इम्पोर्ट भी काफी करते हैं। सर्कुलेशन और इम्पोर्ट ड्यूजप्रिंट उनको सरकार की तरफ दिया जाता है इन दोनों में फायदा है। न्यूजप्रिंट में काफी ब्लैक मार्किटिंग चलती है। मैं समझता हूँ यह मंत्री जी की मालूमगत की चीजें हैं। सवाल जो मैंने किया और आँकड़े जो मंत्री जी ने दिये उनसे साफ नहीं होता। अमृत बाजार पत्रिका

का जो आंकड़ा उन्होंने दिया है सरकुलेशन का वह 1 लाख 26 हजार 32 है और न्यूज प्रिंट क्वार्टिटी एलोटर्ड है वह है 3368.60। यह हर महीने की उनकी एलाटमेंट है यह मानकर मैं चलता हूँ। अगर ऐसा नहीं है तो मंत्री जी बता देंगे। हम यह गिनती नहीं कर सकते कि कितने न्यूजप्रिंट में कितने अखबार निकलते हैं। जब तक यह मालूम नहीं होगा तब तक इम्पोर्टेड न्यूजप्रिंट का मिसयूज होता है या नहीं इसका खुलासा नहीं होगा।

**श्री सभापति :** आपने सवाल तो पूछा ही नहीं।

**श्री सदाशिव बागाईतकर :** बुनियादी तौर पर एलोकेशन का बेसिस क्या है, सवाल यह है। जब तक यह आंकड़े नहीं आयेगे तब तक हम को कोई जानकारी नहीं होगी। मैं चाहूंगा कि इसका खुलासा करें। दूसरी बात मैं इसी संदर्भ में यह कहना चाहूंगा क्योंकि न्यूजप्रिंट की बहुत कमी है इसलिये हम को फारेन एक्सचेंज इस पर खर्च करना पड़ता है। आपको पता होगा कि न्यूजप्रिंट के इस्तेमाल पर किसी किस्म का नियंत्रण नहीं है, गैर जरूरी, अनावश्यक और एडवर्टीजमेंट से लेकर सप्लीमेंट तक सभी चीजें छपती हैं। It is a waste of newsprint. मैं चाहूंगा मंत्री जी स्पष्ट करें कि बेसिस क्या है और जिस तरह का मिसयूज इम्पोर्टेड न्यूजप्रिंट का हो रहा है क्या उस पर किसी किस्म का नियंत्रण रखने का विचार है वह भी आप बता दें तो मैं आपका आभारी हूंगा।

**MR. CHAIRMAN:** Mr. Bagaitkar, though the Minister has got up to answer it, I must say that there is not even a hint,

इशारा भी नहीं है इसमें कि सवाल उठेगा या नहीं उठेगा। आपने फैक्चुअल

में पूछा, फैक्चुअल में उन्होंने बता दिया।

**SHRI SADASHIV BAGAITKAR:** Sir, if you will allow me . . .

**MR. CHAIRMAN:** If he is ready, he will answer it. Otherwise, he will take note of it.

**SHRI V. P. SATHE:** I will answer in the same vein, Sir.

**SHRI SADASHIV BAGAITKAR:** I am merely making an enquiry.

**SHRI V. P. SATHE:** That is right.

माननीय सदस्य ने जहाँ तक जानकारी मांगी थी वह जानकारी उनको दी गई है। जानकारी के कुछ आधार भी हैं। वह और जानकारी चाहेंगे तो वह जानकारी भी हम उनको देने के लिए तैयार हैं। जो कुछ अभी तक नीति है उसका कुछ आधार है। कितने सरकुलेशन के लिए कितना टन दिया जाता है, इसका भी कुछ आधार है, निराधार रूप से नहीं दी जाती है। लेकिन मैं यह मानता हूँ कि दुरुपयोग हो रहा है और काला बाजार में भी कभी कभी न्यूजप्रिंट जाते हैं। इसमें एक कारण नहीं है, अन्य भी कई कारण हैं। एक न्यूजप्रिंट पालिसी यहाँ कुछ दिन पहले रखी गई थी। उसमें मैंने कुछ सुझाव भी रखे हैं कि इस तरह से इन वृष्टियों को पूरा किया जा सकता है। मेरा विश्वास है कि उन पर अमल होने पर ये वृष्टियाँ कुछ हद तक दूर की जा सकती हैं और यह बीमारी ठीक हो सकती है। आपके पास अगर कोई सुझाव हो तो हम उन पर विचार करने के लिए तैयार हैं।

**श्री सदाशिव बागाईतकर :** श्रीमान्, मैं मंत्री जी का आभारी हूँ कि उन्होंने मान लिया है कि इसमें काफी हद तक मिसयूज होता है।

**श्री बी० पी० साठे :** काफी हद तक नहीं, कुछ हद तक।

**श्री सहायित्व बागार्हिकर :** कुछ हद तक मिसयूज होता है, यह तो आपने मान लिया है। मेरा सवाल बुनियादी था और वह यह था कि जब आपने यह मान लिया है कि इसका कुछ हद तक मिसयूज होता है तो मैं यह जानना चाहूंगा कि अगर कोई न्यूजपेपर इस तरह से न्यूजप्रिंट का, खासतौर पर इम्पोर्टेड न्यूजप्रिंट का इस्तेमाल गैर-कानूनी ढंग से करता है तो क्या आपने ऐसे न्यूजपेपर को ब्लैक लिस्ट किया है? इस तरह के न्यूजपेपर के खिलाफ कुछ उपाय करने का क्या आप कोई सुझाव मानते हैं, यदि हाँ, तो वे उपाय क्या हैं, यह बताने की कृपा करें?

**श्री बी० पी० साठे :** ऐसा सवाल पैदा नहीं हुआ है कि किस को क्या करते हैं। कुछ अखबार जिनका सरकुलेशन बन्द है या एक्सेप्शनल नहीं है उनको न्यूजप्रिन्ट्स देना बन्द करते हैं। इतना तो कर सकते हैं और फिर एक साल तक तो यह मान लेते हैं लेकिन वह जब तक फिर से सरकुलेशन देकर हमें संतुष्ट नहीं कर लेते हैं और हम चैक करके यह नहीं देख लेते हैं कि सब कुछ ठीक है या नहीं और अब तक इसकी जाँच न हो जाय, तब तक यह उपाय हो सकता है, लेकिन दूसरी कोई पॉलिशमेन्ट की कानून में गुंजाइश नहीं है। आपकी तरफ से कोई सुझाव हो तो उस पर विचार किया जा सकता है।

MR. CHAIRMAN: Now Mr. Nigam, Next, Shri Shahi and then Shri Kalyan Roy. That would be the end. The question is a very thin one, there is not enough notice in it.

**श्री लाडली मोहन निगम :** श्रीमन्, मैं नम्रतापूर्वक मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहूंगा कि वे सारी बातों से सदन को अवगत करायें। आपने आठ अखबारों के मामलों के संबंध में आँकड़े

दिये हैं। उनमें मैं नम्बर 1 को ही लेता हूँ। अमृत बाजार पत्रिका जिसका सरकुलेशन 1,26,032 है। उसको आपने 3368 टन न्यूजप्रिन्ट आर्वाइव्ड किया है और उसी के साथ हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड्स जिसका सरकुलेशन 2649 है उसको आपने 12 टन दिया है। आप इस बात से मृतकित होंगे कि करीब करीब एक टन में एक हजार किलो होते हैं और एक किलो में करीब 20 अखबार होते हैं। कहने का मतलब यह हुआ कि एक टन में करीब 20 अखबार छप जाते हैं। आपने 2649 की सरकुलेशन पर 12 टन न्यूजप्रिन्ट दिया और इसी आधार पर अमृत बाजार पत्रिका को 1,26,032 की सरकुलेशन पर 3368 टन और आनन्द बाजार पत्रिका को 401485 की सरकुलेशन पर 7701 टन न्यूजप्रिन्ट दिया है। इस तरह से आपके आर्वाइवन में यह जो असंगति है, इस असंगति में क्या ऐसा नहीं मालूम पड़ता है कि आपकी आर्वाइवन नीति समय समय पर स्थिति को देखते हुए और अखबार के प्रभाव को देखते हुए बदल जाया करती है?

**श्री बी० पी० साठे :** नहीं, यह बात गलत है।

**श्री नानेश्वर प्रसाद शाही :** श्रीमन्, मंत्री जी यह मानते हैं और उनको जानकारी है कि इन बड़े अखबारों के अलावा कुछ छोटे अखबार भी हैं जिनका सरकुलेशन इतना व्यापक नहीं है लेकिन वे अपने सरकुलेशन की फिगर्स को बड़ी दिखाकर के कोटा बढ़ाकर लेते हैं और इस न्यूज प्रिन्ट को वे ब्लैक भी करते हैं और उससे नफा उठाते हैं। मंत्री जी का इस बात की जानकारी है, इसलिये मैं जानना चाहता हूँ कि क्या मंत्री जी कोई ऐसी मशीनरी इधर खरीदेंगे जिससे कि इस तरह का जो दुरुपयोग होता है वह रोक

जा सके और अखबार निकालने के नाम पर इस तरह से जो लोग बिजनेस चलाते हैं वह रोका जा सके ?

श्री बी० पी० साठे : सभापति जी, हम यह सोच रहे हैं कि छोटे अखबारों को जो उनकी वाजिब आवश्यकता है उसके अनुसार न्यूज-प्रिन्ट सीट्स में, और समय समय पर यानी उनको रकना न पड़े, और महीने, दो महीने में उनको मिल जाय तो फिर काले बाजार में लेने की गुंजाइश नहीं रहेगी। काला-बाजार तभी होता है जब उनको मिलता नहीं है। वह उनको मिले इसकी व्यवस्था हम कर रहे हैं। उसके ऊपर हम कुछ कदम उठा रहे हैं। जैसे गणना करके सीट्स हम खुद बना कर देंगे और दो-दो महीने के गैप से बेचने का विचार करेंगे। इस एक सुझाव को अमल में लाने के लिये हमने इसके ऊपर कार्यक्रम बनाया है। जैसे वह बात होगी, मेरा विश्वास है कि इससे काले-बाजार की प्रक्रिया काफी हद तक कम हो जायेगी।

MR. CHAIRMAN: Yes, Mr. Kalyan Roy. Yours will be the last question.

SHRI KALYAN ROY: Sir, there are two parts of my question. Firstly, I would like to know whether the Minister is aware that No. 2 Calcutta Observer, No. 3 Hindusthan Standard and No. 4, Satyayug have claimed certain circulation figures which are totally baseless and fictitious. The Hindusthan Standard is not sold more than 150 copies, the Satyayug is not sold more than 1,000 copies and the Calcutta Observer is not sold more than 150 copies. What mechanism is there to find out whether the claims that they are making are correct or fictitious? Is the Minister aware that there was an inquiry into the use of newsprint by the Satyayug in the last two or three years and all the inquiry reports have found that the present owner, publisher and editor are sel-

ling newsprint in the blackmarket and personally made about a few lakhs of rupees? I am quite sure of that and that has appeared in the press also. What mechanism is there to check that this is not sold in the black-market and circulation is exactly what they are claiming? Secondly, Sir what is the use of giving! newsprint to these papers because I knew particularly about the Amrita Bazar Patrika and the Ananda Bazar Patrika that newsprint is taken by them in order to feed the people with all kinds of bogus information. These two papers, costing fifty paise per copy, are completely blacking out all news of Parliament very systematically and in a calculated way. Their are only printing lurid pictures and giving top publicity to all kinds of crime and rape stories. Sir, it is the deliberate policy of the publishers of the Amrita Bazar Patrika and the Ananda Bazar Patrika to publish only light things and make the people very lighthearted. Sir, it is a very serious thing and it does damage to the reading habits of the people. What steps has he contemplated or is he contemplating to see that at least Parliament news is covered as is given by the All India Radio. There should be some mechanism at least to see that the more important news of Parliament is published in these papers which have a terrific influence over the minds of half a million people.

MR. CHAIRMAN: I think you are very much beyond the question.

SHRI V. P. SATHE: I think so, Sir.

SHRI KALYAN ROY: I am only asking related questions. We are entitled to ask these questions.

SHRI V. P. SATHE: Sir, as far as the circulation figures of the Hindusthan Standard and the Satyayug are concerned . . .

SHRI KALYAN ROY: Shri Pranab Mukherjee <sup>w</sup>iH be able to give you the true picture.

SHRI V. P. SATHE; ... the mechanism is our own inspectorate which goes to check. It was found in 1977 and 1978, that is during the previous regime, that the figures given by both the Satyayug and the Hindusthan Standard were correct. Now, later check has not yet been done because <sup>\*t</sup> the paucity of staff. In the Whole country, for these 14,000 odd newspapers, we have very limited staff to do the later check. So that has not been done, and, therefore, these figures are there.

Another issue that my friend raised was whether the newsprint allocation can be connected with the type of printing. May I say honestly that I do not think that will be correct at all? Soft or good, lighthearted or serious type of printing that the newspapers do, is a matter entirely to be left to them and I do not think Government can do anything in that matter in any way, how they use newsprint for advertisement, to influence, the type of their printing, whether it is light-hearted or serious-hearted.

MR. CHAIRMAN; Now, question No. 262.

श्री जे० के० जैन : मेरा सप्लीमेंटरी है। मैं बड़ी देर से हाथ उठा रहा था, मेरी सप्लीमेंटरी इसी के बारे में है। सर, आप पीछे वालों की तरफ ध्यान रखें।

श्री सभापति : मैं यहां नाम नोट करता जाता हूँ जिसका हाथ देखता हूँ। पीछे वाले जल्दी हाथ उठाएँ तो ज्यादा मेहरबानी होगी। अब बैठ जाइये।  
You are too late. I have ruled question No. 262 now.

SHRI PILOO MODY: He has been deprived of a short notice; give him the opportunity today, though it is a bad practice.

श्री सभापति : हमारे यहां नाम नोट होते हैं:

*Diligentia won dormantibus.* That is those who are vigilant and not sleeping get the assistance. I am writing down the names now.

SHRI PILOO MODY: Writing down names is a bad practice.

श्री जे० के० जैन : हम यहां पहले से हाथ उठा रहे थे आपने देखा नहीं।

श्री सभापति : मैं देख चुका हूँ। हर दफे देख चुका हूँ... (Interruptions).  
वहां बटन दबाने जाय।

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: Sir, You should announce the name, not the question No.

श्री हरी संकर भाबड़ा : मेरा सुझाव है कि आप कृपया सदस्य का नाम बोलें। आप उठकर सिर्फ नाम पुकारें।

श्री सभापति : जो एक दफा कह दिया तो कह दिया।

श्री हरी संकर भाबड़ा : मैं नाम बोलने के लिए कहने खड़ा हुआ हूँ। आप संघा की बजाय सदस्य का नाम बोलिए।

\*262. The questioner (Shri M. S. Ramachandram) was absent. For answers vide col. 82—84 infra.]..

#### Sick Thermal power Units

\*263. SHRI SURENDRA MOHAN:  
SHRI RAMAKRISHNA  
HEGDE:

Will the Minister of ENERGY AND COAL be pleased to state:

(a) whether there is any proposal under Government's consideration to revamp the sick thermal power units;

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri